The original story by Gulfaam khan
March 19, 2004

माथेरान की वो रात - *गुलफ़ाम ख़ान*

दोस्तो… सेक्स की कथाएं पढ़ने का मज़ा तो तब ही है, जब आप उसे अपनी मातृभाषा में पढ़ें… मज़ा भी अधिक आएगा और समझने में भी आसानी होगी. और इसके लिए ज़रूरी है कि आपके पास Adobe Acrobat reader हो. इसे आप ऐडोब की साइट पर जा कर मुफ़्त में डाउन लोड भी कर सकते हैं. या अपने कंप्यूटर इंजीनियर से कह कर अपने पीसी में इंस्टॉल कर लें.

जो कहानी मैं आपको सुनाने जा रहा हूं… उसे घटे ज़्यादा दिन नहीं हुए हैं… लगभग तीन महीने पहले की बात है.

हमारे ऑफ़िस के लोगों ने पिकनिक का प्रोग्राम बनाया. तय हुआ कि मुंबई से कुछ दूर स्थित एक पहाड़ी मुकाम 'माथेरान' जाएंगे. हमारे बॉस की सेक्रेटरी अंजना मेरे पास आई और बोली…
गुल… माथेरान का प्रोग्राम बना है… तीन दिन की पिकनिक है…. पर हेड थ्री थाउज़ेंड आया है…
क्या बोलते हो… आओगे क्या? मैंने पूछा… कौन कौन आ रहा है?
वो बोली… देखो, अभी तक तो सिर्फ़ पांच लोग तैयार हुए हैं… मैं सबके पास जा रही हूं … अब कितने लोग तैयार होते हैं… पता नहीं… तुम बोलो.
मैंने कहा… पांच लोग कौन कौन हैं?
भंडारी, राजू , मीना, मैं और असलम.
मीना भी आ रही है… ये जान कर मेरी रगों में तरंगें सी दौड़ने लगीं. उसे जॉइंट हुए अभी सिर्फ़ तीन चार महीने ही हुए थे. वो बिल्कलु फ़िल्म स्टार ममता कुलकर्नी की तरह लगती थी. वैसे ही भरा भरा शरीर… बड़े बड़े बूब्स….रसीले होंठ और सेब की तरह दमकती रंगत… त्वचा ऐसी, जैसे संग-ए-मर मर… जब वो सामने होती थी तो ग़ज़ब ढाती थी और जब मुड़ती थी तो क़यामत बरपा करती थी. जी हां… उसकी कमर के नीचे का भाग इतना सुडौल, गोल और कसा हुआ था जैसे दो चांद आपस में गले मिल रहे हों. वो अक्सर जीन्स ट्राउज़र पहना करती थी, जिसमें उसका हुस्न और उभर कर आता था.
क्या सोच रहे हो…. अंजना ने पूछा… जल्दी बोलो… मुझे और लोगों से भी बात करनी है.
ठीक है…मैंने कहा..मेरा भी नाम लिख दो. किस रोज़ का प्रोग्राम बना है ?
अगले हफ़्ते का… फ्राईडे, सटरडे और सनडे! वो बोली.
ठीक है… कल पैसे दे दूंगा.
वो मेरा नाम लिस्ट में लिख कर आगे बढ़ गई और मैं पिकनिक के बारे में सोचने लगा.
ख़ुदा ख़ुदा करके फ्राईडे आया…. लगभग १२ लोग तैयार हो गए थे पिकनिक के लिए. उनमें मीना और अंजना के अलावा तीन और लड़कियां भी थीं.

तयशुदा कार्यकम के तहत हम सबको सुबह ६ बजे वीटी स्टेशन पर मिलना था. मेन लाइन के इंडिकेटर के नीचे सब जमा थे. सबके हाथों में बैग वग़ैरह थे.
लोकल ट्रेन से हमें नेरल स्टेशन जाना था. वहां से हमें छोटी ट्रेन पकड़नी थी जो हमें माथेरान की पहाड़ी पर ले जाने वाली थी...
लोकल ट्रेन में ही पिकनिक का मूड बन गया और सबने अंताक्षरी शुरू कर दी. उस वक़्त सबको पहली बार मालूम हुआ कि मैं कितना अच्छा गाता हूं. सब मेरी आवाज़ सुन कर हैरान थे. मैं मीना की आंखों में भी पसंदीदगी की भावना देख रहा था. मुझे बड़ा अच्छा लगा.
जब मेरा टर्न आया तो मुझे 'म' से गाना था. मैंने मीना की आंखों में देखा और गाना शुरू किया.
'' मुझे तुमसे मोहब्बत है, मगर मैं कह नहीं सकता,
मगर मैं क्या करूं, बोले बिना भी रह नहीं सकता....'
गाना इतना अच्छा था कि सबने ज़िद की कि मैं उसे पूरा सुनाऊं. मैंने गाना आगे बढ़ाया...
'' मेरे ख़्वाबों की शहज़ादी, जहां तुम मुस्कुराती हो...
बहारें क्या, ख़िज़ाओं में हज़ारों गुल खिलाती हो,
तुम्हें जिसने भी देखा है... जुदाई सह नहीं सकता....
मुझे तुमसे मोहब्बत है, मगर मैं कह नहीं सकता....
नेरल स्टेशन आ गया और हम लोग छोटी ट्रेन में सवार हुए. छोटी ट्रेन का सफ़र भी ख़ासा लंबा था. हमने दूसरा गेम शुरू किया. गेम का नाम था 'राइमिंग फ़न'. इसमें हमें कोई पंक्ति या कविता की एक लाइन बोलनी पड़ती थी और सामने वाली टीम को राइमिंग, यानी तुकबंदी/काफ़िये के साथ लाइन पूरी करनी पड़ती थी. यानी एक शेयर बनाना पड़ता था.

मीना मेरी अपोज़िट पार्टी में थी. पहला नंबर उसी का था. उसने कहा.... 'जब सूरज डूबता है और रात होती है...'
जवाब देने की बारी हमारी पार्टी की थी.... हमारी पार्टी के शुक्ला जी ने जवाब दिया... 'जब सूरज डूबता है और रात होती है, हम तनहाई में मिलते हैं और फिर बात होती है.'
सबने ज़ोर का ठहाका लगाया और शुक्ला जी से पूछने लगे... कौन सी बात शुक्ला जी... और तनहाई में मिलने का चांस मिल जाता है क्या....?
अब हमारी पार्टी की बारी थी.... मैंने कहा... ' हर वक़्त मुझे तेरा ही ख़याल है.... '
सामने से अंजना बोली.... ' तुझसे मिल न पाई, यही मलाल है..'
अब फिर सामने से सुलेखा ने सवाल किया.... ' अचानक देखा कि मौत खड़ी थी...'
मैं फ़ौरन बोला... ' ग़ौर से देखा तो सौत खड़ी थी.'
सबका हंस हंस कर बुरा हाल हो गया.
इसी तरह हंसते गाते हम माथेरान पहुंचे. हमने चार कमरे बुक कराए थे. लड़कियां बोलीं... दो कमरों में हम पांच लड़कियां रहेंगी... बाक़ी दो में तुम सब लड़के. हमने कहा, ये तो नाइनसाफ़ी है. तुम पांच लोगों के लिए दो कमरे और हम सात लोगों के लिए भी दो कमरे ?
लड़कियां बोलीं... तो ... मतलब क्या है तुम्हारा...
हम सब मूड में आ गए थे. राजू बोला... सब बराबर बराबर रहेंगे. एक एक कमरे में तीन तीन लोग.

वो कैसे ? मीना झट बोली… उसके माथे पे बल आ गए थे.

भंडारी जो कि अकाउंटट था, ने हिसाब किताब समझाते हुए कहा… क्यों न एक कमरे में एक महिला और दो पुरुष रहें.
अंजना बोली… हम पांच लड़कियां हैं… ये कैसे हो सकता है.
भंडारी बोला… मुझे मालूम था ये सवाल ज़रूर उठेगा… आख़िरी रूम में दो महिला और एक पुरुष… मैं आख़िरी रूम में रहने को तैयार हूं. भंडारी हंसते हुए बोला.
सब लड़कियां भंडारी को मारने दौड़ीं. उनमें हम लड़के भी थे.
ख़ैर ये तो मज़ाक था… हुआ वही. यानी पांचों लड़कियों ने दो रूप पर कब्ज़ा जमाया और हम सात लड़कों ने जैसे तैसे दो रूम में एडजस्ट किया.
फिर लंच करने के बाद हम सब घूमने निकले. मैं कोशिश कर रहा था कि हमेशा मीना के साथ साथ ही रहूं. और उसमें मुझे कामयाबी भी मिल रही थी. वो मेरे जोक्स और मेरी शायरी सुन कर बहुत मज़े ले रही थी. फिर मैं और मीना अपने ग्रूप से दूर दूर चलने लगे. मैं सोचने लगा कि अपने मन की बात उसे कैसे बताऊं. उसके सेक्सी गदराए शरीर को देख कर मेरे सारे बदन में आग सी लग रही थी. आख़िर कैसे उसे पटाऊं… मैं बात करते करते यही सोच रहा था. बार बार मेरी नज़र उसके सीने पर जा रही थी. वो भी भांप गई थी. आख़िर उसने बोल ही दिया. आपकी नज़रें कुछ चंचल सी हो रही हैं. मैं झेंप कर मुस्कुराया और बोला… क्या करें… जब सामने कुंआ हो तो प्यासे की नज़र उधर ही जाएगी ना. उसकी हंसी रुक न सकी और वो बोली…. देखो सामने होटल है… पेप्सी पी लो. मैंने कहा… पेप्सी से ये प्यास नहीं बुझेगी…
फिर कैसे बुझेगी… कोक पी लो. वो हंस कर बोली.
मैं फट से बोला… कोक से याद आया…. क्या कभी तुमने कोक शास्त्र पढ़ी है?
वो मुस्कुराई और बोली…. ये भी कोई पढ़ने की चीज़ है…
मैं गंभीर हो कर बोला… नहीं, पढ़ कर देखो, बहुत ही अच्छी किताब है. इसमें ज़िंदगी कैसे बितानी चाहिए, वो लिखा है.
वो फिर हंस पड़ी और बोली… चलो हटो… ये थोड़े ही न लिखा है.
मैंने उसकी बात पकड़ ली और बोला… तो फिर क्या लिखा है ?
उसने कोई जवाब नहीं दिया. मैंने फिर ज़िद की तो वो बोली.
तुम जानते हो, क्या लिखा है, मुझसे क्यों पूछते हो.
मैं बताऊं क्या लिखा है… मैंने उसकी आंखों में आंखें डाल कर कहा.
हां बोलो, क्या लिखा है.
उसमें लिखा है कि एक पुरुष और एक स्त्री को कैसे ज़िंदगी का भरपूर मज़ा लेना चाहिए.
उसने नकली हैरानी से कहा… अच्छा ? वो कैसे ?
एक दूसरे में समा कर. तन से तन का मिलन करा कर.
उसने सिर्फ़ लंबा सा ‘हूं’ कहा. फिर कुछ सोच कर बोली…. यानी कैसे ?
मुझे मौका मिल गया था. मैंने कहा… अगर तुम अकेले में मुझे सिर्फ़ ३० मिनट मिलो तो मैं तुम्हें अच्छी तरह समझा सकता हूं.

और यक़ीन जानिए दोस्तो, उसका जवाब सुन कर मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे १०० करोड़ की लॉटरी लग गई हो… वो बोली… जब तुम कहो…. कहां मिलेंगे ?
मेरे सारे बदन में सनसनी सी दौड़ गई… दिल धड़कने लगा. अजीब सा नशा छाने लगा. वो मुझे ग़ौर से देख रही थी…. मैं अपने होंठों पर ज़बान फेर रहा था.
वो आगे बढ़ गई और मैं अपने होश को एकत्र करके उसके पीछे चलने लगा.

तरह तरह के पॉइंट्स देखते देखते सब थक से गए थे.
एक जगह रेस्टोरेन्ट था. सबने कहा कि चलो थोड़ा फ्रेश हो जाते हैं. रेस्टोरेन्ट खुली जगह पर था और कुर्सियां दूर दूर रखी हुई थीं. मीना दूर एक कुर्सी पर बैठ गई. मैंने भी एक कुर्सी उठाई और वहां ले गया.
वो मुझे देख कर मुस्कुराई और बोली…. चलो…राइमिंग फ़न खेलते हैं…
उसने पहला सवाल दाग़ा…. ‘ कितना समय गुज़र गया, ये कैसी जुदाई है ’…
मैंने बेशर्म हो कर जवाब दिया…. ‘ चूत मेरी फट गई, ये कैसी चुदाई है.’
ओह शिट ! वो नकली गुस्से से बोली…. पागल हो क्या?
अच्छा सॉरी सॉरी… अब मेरी बारी है… सवाल सुनो…
मैंने कहा… ‘ तुमने कसूर किया है, दंड देना होगा…’
वो सोचने लगी और बोली… नहीं… मैं नहीं समझी.
हार गई क्या?
हारी कैसे ? वापस बोलो.
तुमने कसूर किया है, दंड देना होगा.
वो बोली… हमारी पार्टी को तुम्हें फ़ंड देना होगा.
मैं हंस कर बोला… बकवास… ये तो कोई जवाब ही नहीं हुआ.
वो बोली… अच्छा तो तुम बोलो.
मैंने कहा… पहले कहो तुम हार गईं.
हां मैं हार गई… जवाब बताओ.
सुनो…. तुमने कसूर किया है, दंड देना होगा… अपनी चूत में मेरा लंड लेना होगा.
वो ज़ोर ज़ोर से हंसने लगी. बाकी लोग हमें देखने लगे.
असलम दूर से चिल्लाया…. अरे भई क्या जोक हो रहा है… हमें भी तो सुनाओ !
मैंने भी चिल्ला कर कहा… सुनाने के काबिल नहीं है !
मैंने देखा कि मीना की आंखों में लाली सी छाई हुई है… वो गर्म हो चुकी थी और बड़ी नशीली नज़रों से मुझे देख रही थी, उसके गुलाबी होंठों पर मद्धम सी मुस्कान थी. मैं उसकी आंखों में लगातार देख रहा था. उसकी नज़रें मेरी आंखों से हट कर मेरे सीने पर फिसली और फिर वहां से होती हुई मेरी पेंट की फूली हुई जगह पर रुक गई. फिर वो शरारती नज़रों से मुझे देख कर बोली… अच्छा अब एक और सवाल…. ‘ मछली जल की रानी है…. ’
मैं कंफ़्यूज़्ड हो गया… वो हंसते हंसते बोली… बोलो न… मछली जल की रानी है.
मैं सोचने लगा… कि क्या बोलूं… वो फिर बोली… मछली जल की रानी है..
मैं सोचता रहा… सोचता रहा… आख़िर बोला… जीवन उसका पानी है…

वो मुंह बना कर बोली…. ऊं हूं… ये तो बच्चा भी जानता है… फिर से सोचो… मछली जल की रानी है.
जब मुझे कोई जवाब नहीं सूझा तो वो बोली… अच्छा बोलो हार गए…
मैंने कहा… हां भई हार गया … तुम ही बताओ…
वो बोली… मछली जल की रानी है…
तुमसे गांड मरानी है…
ये कह कर वो खिलखिला कर हंस पड़ी और उठ कर वहां से भागी. मेरा लंड फड़फड़ाने लगा… मैं इतना बेकाबू हो गया कि मैंने ये भी नहीं सोचा कि कोई मुझे देख भी सकता है. मैं बेताब हो कर अपना लंड मसलने लगा….और इससे पहले कि मेरी पेंट ख़राब हो जाती… मैं रुक गया और किसी भी तरह अपने ऊपर काबू पाया. उसकी मोटी सी, गोल गोल, नरम नरम गांड मेरी नज़रों के सामने घूमने लगी. अच्छा तो ये है उसकी ख़ूबसूरत गांड की ख़ूबसूरती का राज़… ज़रूर वो गांड मरवाने की शौकीन होगी. ओह, अब मैं कैसे बरदाश्त करूं. कैसे अपने ऊपर काबू पाऊं. क्या करूं, कैसे उसे चोदूं… कहां चोदूं… उफ़ वो उसकी गांड…. जैसे रूई के बड़े बड़े गाले… मक्खन जैसे… जब उसकी गांड पर हाथ फेरूंगा, तो कैसा लगेगा… मेरे बदन में झुरझुरी सी आ गई.
मैंने देखा कि सलील मुझे आवाज़ दे रहा था…. नाश्ता आ गया था.

शाम हो चुकी थी. हमने कैंप फ़ायर का प्रोग्राम बनाया. बड़ा सा अलाव जला कर हम सब उसे घेर कर बैठे.
तभी भंडारी ने कहा… अच्छा सुनो दोस्तो… अब आप सबके लिए एक सरप्राइज़ ! सब उसे देखने लगे…
वो मुस्कुरा कर बोला… अब मैं निकालता हूं अपना जादूई पिटारा… खुल जा सिम सिम… ये कह कर भंडारी ने अपने गले में लटके झोले को नीचे उतारा और उसमें हाथ डाल कर उसने तीन बड़ी बड़ी बोतलें बाहर निकालीं. हमने देखा वो व्हिसकी की बोतलें थीं…. मेरे साथ ही बाकी लड़के भी ख़ुशी से उछल पड़े.
वाव !!! क्या काम किया है भंडारी तू ने ! राजू ने तो उसका गाल ही चूम लिया.
अंजना बोली…. ओए भंडारी ! ये क्या ? क्या दारू पी कर लफड़ा करने का है क्या ?
भंडारी बोला… बहन जी… हम लोग बेवड़े नहीं हैं… .ये सब सिर्फ़ फ़न के लिए !

फिर शराब की महफ़िल जम गई…. हमने लड़कियों को फुसलाना शुरू किया… अरे एक एक पेग पी लो. मज़ा आ जाएगा… सारी थकान दूर हो जाएगी…
लड़कियों के मन में भी मस्ती थी… उन्होंने थकान दूर करने के बहाने हामी भर ली… और फिर क्या था… एक से दो पेग, और दो से चार…
मैं पहले से प्लान बना चुका था… मैंने दो से ज़्यादा पेग को हाथ ही नहीं लगाया….
आख़िर वही हुआ, जिसकी उम्मीद थी… रात ढलते ढलते सारी लड़कियां नशे में धुत हो गईं और उल्टी-सीधी हरकतें करने लगीं. भंडारी ने अंजना से पूछा कि क्या उसने कभी सांप देखा है… अंजना लड़खड़ाती हुई आवाज़ में बोली…नहीं.. मगर मेरे को देखने का है…
बस फिर क्या था… भंडारी ने आव देखा न ताव… झट से पेंट उतार कर नंगा हो गया और अपना फनफनाता हुआ लंड बाहर निकाल लिया. अंजना के साथ साथ बाक़ी लड़कियां भी आंखें फाड़ फाड़ कर उसके ७ इंच के लंबे चौड़े लंड को देखने लगीं. अंजना उसके लंड को घूर घूर कर देखती हुई बोली… बहुत ज़हरीला लगता है !

और दोस्तो… बस वही हुआ जो हम चाहते थे… मीना के अलावा सारी लड़कियां लड़कों पर पल पड़ीं. मीना मुझे देख रही थी…. मैंने उसे इशारा किया और चादर उठा कर एक तरफ़ चलने लगा… मीना मेरे पीछे थी… एक साफ़ सुथरी सपाट जगह देख कर मैंने चादर बिछाई और उस पर बैठ गया. मीना मेरे गोद में आ कर बैठ गई… उसका हाथ मेरी पैंट की ज़िप पर था… मेरा लंड तन गया. वो उसे सहलाने लगी… मैंने ज़िप खोली और लंड को बाहर निकाल लिया… चांदनी रात थी… वो बड़े ध्यान से मेरे तने हुए लंड को देख रही थी… उसने कहा… कितने इंच का है…?
मैं बोला… आम खाना है या उसका साइज़ देखना है. वो बोली… फिर भी.
मैं बोला… ज़्यादा नहीं…. सिर्फ़ ६ इंच.
वो बोली… भंडारी से छोटा है.
मैं गुस्से से बोला… तो जाओ उसके पास.
वो हंसने लगी…बोली…तुम मर्दों में यही बुराई है… ज़रा किसी की तारीफ़ कर दी कि गांड जल जाती है.
मैंने सोचा… गुस्सा करके फायदा नहीं.. कहीं हाथ से निकल न जाए.
उस वक्त वो सलवार पहने हुई थी… मैंने सलवार की नाड़ी पर हाथ डाली… पर वो तो पहले से खुली हुई थी. यानी वो पहले से तैयार थी. मैंने अंदर हाथ डाला. पैंटी वग़ैरह कुछ नहीं… हाथ सीधे उसकी चूत से टकराया. गरम गरम, गीली गीली…मेरे दांतों में झनझनाहट सी होने लगी. मैं उतावला हो गया. दीवानों की तरह मैंने उसकी सलवार उतारी और ये देख कर दंग रह गया कि उसका छुपा हुआ शरीर बेहद गोरा और दमकीला था. उसे शायद शेव करने की आदत थी. चूत के ऊपर का मैदान एकदम चटियल था और उसकी चूत साफ़ नज़र आ रही थी. एक दम कुंवारी, कसी हुई तंग सी. मुझे हैरत हुई कि जो लड़की इतनी चालू है, उसकी चूत इतनी टाइट कैसे ? मैं उसकी जांघों पर झुक गया और मैंने उसकी दोनों टांगों को फैला दिया. उफ़, इतनी ख़ूबसूरत और साफ़ स्वच्छ चूत मैंने जिंदगी में कभी नहीं देखी थी. चूत की दरारों को मैंने फैलाया. गुलाबी रंग का गुलिस्तान खुल गया. उसका नाज़ुक दाना अनार के दाने की तरह चमक रहा था. मेरी लार टपकने लगी. पता नहीं कैसे मेरी ज़बान उसके दाने को चाटने लगी…. वो सिसकारियां भरने लगी. मेरी इंडेक्स उंगली उसकी दरार में घुस गई. ऐसा लगा जैसे मैंने मक्खन में अपनी उंगली घुसा दी हो. ये कैसा एहसास !
मैं अपनी उंगली आगे पीछे करने लगा… वो ज़ोर ज़ोर से सिस्कारी भरने लगी…. उसकी सांसें तेज़ तेज़ चलने लगीं. वो कांपते हुए बोली… और ज़ोर से, और ज़ोर से…. गुल आई लव यू… प्लीज़… घुसा दो अपना लंड मेरी चूत में… जल्दी… कहीं कोई आ न जाए.
मैंने उसे चादर पर लिटाया और उसकी दोनों टांगों को ऊपर अपने सर तक उठा लिया. उसकी चूत भी जैसे सांस ले रही थी … यानी फूल पिचक रही थी. मैंने धीरे से अपना तना हुआ लंड उसकी चूत के ऊपर रखा और थोड़ी देर रुका… वो तड़पते हुए बोली… क्या कर रहे हो… डालो जल्दी…डालो न…
मैंने धीरे से पुश किया. लंड का सिर्फ़ सर ही अंदर गया. वो फिर तड़पी… घुसाओ घुसाओ….
मैंने लंड बाहर निकाल लिया और उसे चूमने लगा… वो फनफनाते हुए क्रोध से बोली… चूमाचाटी छोड़ो.. मुझे चोदो… वेरी हार्ड…. फ़क मी… यू स्वाइन !
मैंने फिर अपना लंड उसकी चूत के दरार पर रखा. मुझे ऐसा करने में बड़ा मज़ा आ रहा था…. फिर मैंने सोचा कि कहीं वाकई में कोई आ गया तो सारे किए कराए पर पानी फिर जाएगा….इसलिए मैंने धीरे धीरे अपना

मज़बूत लंड उसकी चूत में उतारना शुरू किया. वो सिसकारियां भरती रही. उसकी चूत बहुत तंग यानी टाइट थी. लेकिन बहुत ज़्यादा चिकनी भी थी, इसलिए मुझे कोई कठिनाई नहीं हो रही थी… मैंने धीरे धीरे अपने लंड को आगे पीछे करना शुरू किया…. वो भी नीचे से उचकने लगी… हम दोनों की टाइमिंग बड़ी अच्छी थी. जब मैं अपना लंड उसकी चूत में घुसाता, तो वो नीचे से अपना गांड ऊपर करती. इतना मज़ा आ रहा था जैसे मुझे स्वर्ग मिल गया हो. सचमुच टाइट चूत की बात ही कुछ और होती है. मेरे अंदर ये ख़ास बात है कि मैं जल्द झड़ता नहीं. अगर मुझे जल्द झड़ना होता है तो मैं लड़की की गांड मारना शुरू कर देता हूं. चूंकि मीना को गांड मरवाने का भी शौक था… इसलिए मैंने उसके कान में कहा… क्या ख़याल है… अब गांड हो जाए. वो दांत पर दांत रख कर बोली…. तुम्हारे लिए गांड तो क्या जान भी हाज़िर है… ये कह कर वो पलट गई और लंबी हो कर लेट गई… उसकी गांड की उभरी हुई फांकों को देख कर मेरा नशा दुगुना हो गया. मेरी उम्मीद से भी ज़्यादा हसीन थी उसकी गांड. इतनी बेहतरीन गोलाइयां, जैसे किसी बुत-तराश ने बरसों की मेहनत से तराशी हो. और त्वचा की रंगत इतनी उजली कि चांदनी भी शरमा जाए. एक पल मुझे ख़याल आया कि ये गांड तो पूजा करने योग्य है…. उसे कैसे अपने लंड से गंदा करूं.

पर मीना की सिसकारियों ने मुझे मजबूर कर दिया कि मैं अपना झूमता हुआ लंड उसकी गांड के छेद में उतार ही दूं. अब सवाल था ल्युब्रिकेंट का. उसकी गांड उसकी चूत से भी ज़्यादा टाइट थी और मेरा लंड इतना मोटा तो था ही कि बिना चिकनाई के घुस नहीं सकता था. मैंने मीना से कहा… सुनो मीना.. बिना ल्युब्रिकेंट के ही मुझे तुम्हारी गांड मारनी होगी… वो बोली… जाने मन… कोई बात नहीं… तुम कोशिश करो… मैंने उसे घोड़ी बनने के लिए कहा… यानी डॉगी स्टाइल में आने के लिए कहा… वो फ़ौरन अपने हाथों और पैरों पर घोड़ी की तरह खड़ी हो गई. अब उसकी गांड का छेद थोड़ा खुल गया था. मैंने फिर भी रिस्क न लेते हुए अपने थूक से अपने लंड को गीला किया और आहिस्ते से उसकी गांड के सुराख पर रख दिया. थोड़ा थूक मैंने उसकी गांड के छेद में भी रगड़ा…. अब कुछ ठीक हो गया था. मैंने अपने लंड का सुपाड़ा उसकी गांड के छेद पर रखा और धीरे से अंदर पुश किया. मुझे कामयाबी मिली. लंड का अगला भाग थोड़ा अंदर गया. मीना के मुंह से आह निकल गई. मैंने पूछा, दर्द तो नहीं हो रहा है. वो दांत पीसते हुए बोली… बिल्कुल नहीं… परम आनंद…परम सुख का अनुभव हो रहा है. मुझे ख़ुशी हुई और मैंने फिर ज़ोर लगाया. लंड का एक चौथाई हिस्सा गांड में घुसा और वो फिर आहें भरने लगी. मैंने फिर थूक लगाया और पुश किया. आधा हिस्सा अंदर घुस गया. वो अपना मुंह मेरी तरफ़ करके बोली… क्यों तरसा रहे हो. डालो न फटाफट. मैंने कहा, यार मुझे तुम्हारा ख़याल आ रहा है… कहीं तुम हर्ट न हो जाओ. वो अपने होंठों को काटते हुए बोली… हर्ट की मां की चूत… मारो धक्का फटाफट.

मुझे क्या था. मैंने ताकत लगा कर पूरा का पूर लंड उसकी गदराई गांड में उतार दिया और वो चीख पड़ी. मैंने कहा… देखा, मैं न कहता था. मीना बोली… नहीं नहीं. सब ठीक है… आगे पीछे करो, मगर धीरे धीरे…. मैं अपना लंड उसकी गांड में आहिस्ते आहिस्ते अंदर बाहर करने लगा. मुझे ऐसा लग रहा था जैसे दुनिया में इससे बढ़ कर कोई ख़ुशी नहीं, कोई मस्ती नहीं, कोई सुख नहीं. लंड की मेहरबानी और गांड के करम ने मुझे और मीना को वो भरपूर आनंद से माला माल किया कि उस वक़्त अगर कोई हमसे ये कहता कि जाओ करोड़ों का ख़ज़ाना बट रहा है, तो भी हम अपनी चुदाई को बीच में छोड़ कर कहीं न जाते. लगभग दस मिनट बाद मेरा सारा पानी झर झर करके बहने लगा. कुछ तो मीना की गांड में चला गया और कुछ उसकी कमर पर. वो ज़ोर सी चिल्लाई. ऐसा लगा कि वो भी झड़ गई है…. उसने अपने हाथ-पैर ढीले छोड़ दिए और सीधे सीधे लेट गई. धीरे धीरे उसकी लंबी सांसें ठीक हो गईं और मुझे ऐसा लगा कि

वो सो गई है… मैंने उसे धीरे से आवाज़ दी… मगर वो मस्त नींद में थी और उसके होंठों पर एक संतोष भरी मुस्कान थी.

- गुलफ़ाम ख़ान